प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह स्वतंत्रता दिवस पर दिनांक 15.8.90 को लालकिले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए

प्यारे देशवासियों, स्वतंत्रता दिवस के इस अवसर पर आपको मेरी हार्दिक बधाई। आज से 45 वर्ष पूर्व इतिहास ने करवट लिया था और इसी स्थान से पंडित जवाहर लाल नेहरू ने स्वतन्त्र भारत का, ये सुन्दर तिरंगा लहराया था और उसी के साथ कोटि-कोटि जनता की आशाएं लहरा उठी थीं। ये झंडा हमारे संघर्ष, हमारे संकल्प, हमारी शक्ति का प्रतीक है। इसमें यदि सुर्खी है तो हमारे शहीदों के लहू की सुर्खी है। इसमें सफेदी है तो उनके राख की सफेदी है और हरियाली है तो उनके सपनों की हरियाली है। इतनी कुर्बानियों के बाद हमको ये राष्ट्र ध्वज मिला। इस अवसर पर हम स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। हम शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। पूरा राष्ट्र उनकी स्मृति में उनके आदर में अपना सर नवाता है और सही बात है जिस देश में शहीदों के मजार खण्डहर होते हैं वो राष्ट्र भी खण्डहर होता है। इसलिए हम अपने शहीदों को याद करके, अपने स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों को याद करके आते हैं पंडित जवाहर लाल नेहरू, याद आते हैं जयप्रकाश नारायण, याद आते हैं सरदार पटेल, याद आते हैं मौ० अबुल कलाम आजाद, सरदार भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस हमारे शहीदों के, हमारे स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों के काफिले इतने लम्बे कि सबके नाम नहीं लिए जा सकते हैं लेकिन उनका भी मैं नाम लेना चाहता हूँ जिनका नाम कभी अखबारों में न छपा हो। जिनकी जानकारी किसी को नहीं हुई, लेकिन जिन्होंने अपनी मिट्टी इस मिट्टी में मिलाकर के इस देश को आजादी दिलाई है उनको भी हम याद करते हैं और हमें वो दिन याद आते हैं जब अंग्रेजों की गोलियां चलती थीं और वो दिन स्वतन्त्रता संग्राम के थे। जब अंग्रेजों की गोलियां कम हो गयी लेकिन आजादी के बन्दों के सीने कम नहीं हुए और इंतनी कुर्बानी के बाद हमको ये आजादी मिली। आज का दिन ही केवल ऐतिहासिक नहीं है बल्कि ये स्थान भी ऐतिहासिक है। दिल्ली के गलियारों से तवारिख के काफिले गुजरे हैं। कुरूक्षेत्र बहुत दूर नहीं है। उसी कुरूक्षेत्र में कृष्ण ने महाभारत का शंखनाद किया था। गीता का उपदेश दिया था। पानीपत जाएं अपनी स्मृति में आज भी तलवारें झनक उठती हैं और लालकिले के पत्थर को कुरेद कर देखें। आज भी उनके पुराने शान की सुर्खी आज भी मिलेगी उनको। और ये चांदनी चौक ने कितने बादशाहों की चांदनी चढ़ती हुई देखी और कितनी बादशाहों की चांदनी ढलती हुई देखी। कितना बड़ा हमारा इतिहास है और आजादी के बाद भी इस देश की कम परीक्षाएं नहीं हुई बहुत कठिन दौर से गुजरा लेकिन हर दौर से देश की महान जनता और मजबूत निकली और इस देश को युद्ध से गुजरना पड़ा, इस देश को प्राकृतिक के आपदा से गुजरना पड़ा। इस देश ने जनतान्त्रिक ढंग से सत्ता का परिवर्तन को भी देखा

इन सब परीक्षाओं के अंदर एक चीज बहुत स्पष्ट होकर आई कि यहां पर जनतंत्र की जड़ें मजबूत हो चुकी हैं। अब उसको हिलाने वाला कोई नहीं। जनता ने इस देश की इज्जत और सम्मान को हमेशा ऊंचा रखा है और यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। आज देश के सामने दोहरी चुनौतियां आ गई है। एक और अलगाववाद, दूसरी ओर हिंसा। अलगाववाद हमारे देश की एकता को चुनौती दे रहा है और हिंसा हमारे जनतंत्र को चुनौती दे रहा है। आज हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के पूरे इतिहास को चुनौती है। हमारे राजनैतिक, सामाजिक मूल्यों और व्यवस्था को चुनौती है। किसी एक दल को चुनौती नहीं है, किसी एक वर्ग को चुनौती नहीं है। बल्कि पूरे समूचे ढांचे को ही एक साथ चुनौती हमारे सामने आ गई है। जम्मू कश्मीर, पंजाब, आसाम ये अलग स्थानों के नाम हैं समस्याएं वहां अलग भी हैं, लेकिन जहां तक हिंसा की चुनौती है, अलगाववाद की चुनौती है वो एक ही है इसलिए हमको एक हो करके उसका मुकाबला करना होगा अलग-अलग हो करके इसका नहीं मुकाबला हो सकता और इसका हमारा प्रयास रहा है। जम्मू और कश्मीर की जनता के प्रति आज मेरा दिल जाता है, क्योंकि आजादी की लड़ाई में उन्होंने शिरकत की थी। पंजाब की जनता के प्रति दिल जाता, क्योंकि इस आजादी को हासिल करने में उन्होंने अपने खून बहाया जलियांवाला बाग में आज एकसाथ हिन्दू-सिख एक खूनों की निशानी मिलती है। आसाम हमारा सबसे शांतमय राज्य रहा है और अब अगर इसका हल निकलेगा तो वहां की जनता से निकलेगा। कश्मीर की जनता से मैं कहना चाहता हूं कि वे हमारे धर्मनिरपेक्षता हमारे आजादी के प्रतीक रहे हैं और केवल जम्मू-कश्मीर की घाटी उनकी नहीं है पूरा देश उनका है और अगर हम लोगों से कुछ गलतियां भी हुई हैं उन गलतियों को हम सुधारने को भी तैयार हैं, क्योंकि वे अपने, लेकिन इस देश के बाहर जाने की बात जो सोचते हैं वो एक बहकावे में दूसरे देश के बहकावे में आ करके एक भ्रम में पड़े हुए हैं उनको सोचना चाहिए कि आजादी के बाद एक दुखद कहानी हुई थी जिसमें लाखों लोग इस देश के चले गए। पड़ोस देश में, लेकिन आज भी वे मुहाजिर कहा जाते हैं आज भी उस देश में शिकार नहीं जाते हैं और गोलियों का भी सामना करना पड़ता है। इसलिए ये न अकेले समझे कोई जो पंजाब में है, जम्मू-कश्मीर में है, आसाम में कि वे अकेले हैं उनकी समस्याओं के साथ उनके कठिनाइयों के साथ उनकी दुख दर्द के साथ पूरा भारत पूरी शक्ति से लड़ने को तैयार है भारत की समृद्धि उनकी समृद्धि है और मुझे विश्वास है कि एक दिन आएगा कि लोगों को यह एहसास होगा जो बहके हमारे नौजवान हैं उनको यह एहसास होगा और एक महान भारत को बनाने में उनकी उतनी ही हिस्सेदारी होगी।

जब ये सरकार आई थी तो पहले ही कुछ दिनों के अंदर हम लोग हरमिंदर जी गये वहां माथा टेके थे। दुर्गियानी मंदिर भी गये थे जलियानवाला बाग के शहीदों के स्मारक पर भी गए थे। पंजाब की शांति के लिए प्रार्थना की थी। वो शांति आज तक भी पंजाब में नहीं आई, लेकिन उसके जाने के पीछे वहां जाने के पीछे एक मकसद था। एक ऐसा माहौल बन गया था। कि हर सिख शक की

नजर से देखा जाने लगा था उनके सम्मान में कहीं ठेस लगी थी उनको सम्मान देने के लिए, उनको विश्वास देने के लिए, उनको ये कहने के लिए कि आपकी जो कुर्बानियां इस देश के लिए रही हैं। यहां के आजादी के लिए रही हैं, यहां पर हरित क्रांति आने के लिए रही हैं, यहां पर उद्योग को बढ़ाने के लिए रही है उसको देश आभार से स्वीकार करता है और अब एक जब माहौल बना है कि वो शक का जो माहौल जो है खत्म हुआ है एक विश्वास का माहौल पैदा हुआ है जरूर, जहां तक हिंसा का सवाल है वो जरूर बढ़ा है ये हमारे लिए चिन्ता की चीज है। हम लोगों ने बहुत कुछ किया इस बीच में कि जहां पर दिल में कांटा चुभ रहा हो। हमारे सिख भाइयों को उसको दूर करने के लिए 59वां संशोधन जो आया था पंजाब के बारे उसे समाप्त किया गया। बहुत से निरापराध लोग जो बंद थे उनको छोड़ा गया सेना के अंदर जो छोड़ कर चले गये थे कि गुस्से की वजह से उनको भी जेलों से रिहा किया गया। दिल्ली के जो दंगे हुए थे सन् 84 में उसके लिस्ट (अस्पष्ट) कायम किए गए। ये कोई सौदे की नीयत ने नहीं किया गया। ये एक विश्वास पैदा करने के लिए किया गया था, क्योंकि मेरा मानना है कि पंजाब की जनता जरूर शांति चाहती है, जो भारत में रहना चाहती है और कभी भी अलगाववादियों को पंजाब की जनता के साथ उसे हम नहीं जोड़ेंगे और पंजाब की जनता पर हमारा विश्वास बना रहे, लेकिन ये भी फैसला करना पड़ेगा इस अवसर पर कि कौन भारत के साथ और कौन भारत के साथ नहीं है? जो भारत के साथ नहीं है उन शक्तियों के साथ समझौता नहीं हो सकता। क्योंकि सब कुछ लुटाया जा सकता है लेकिन भारत की अक्षुणता के साथ राई भर समझौता नहीं हो सकता है। इसलिए हमारी नीति साफ है हम पंजाब की जनता प्यार से जीतेंगे, लेकिन देशद्राहियों को हम हथियार से जीतेंगे, हम प्यार का भी इस्तेमाल करेंगे और हथियार का भी करेंगे।

प्यारे देशवासियों, नौजवानों, स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों आज स्वतन्त्रता के दिवस पर हमको संकल्प लेना है, हमको दूसरी स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़नी है, वो लड़ी जा रही है, वो सामने है उसी स्वास में हमको शिरकत करना है। इस देश को बचाने को एक पीढ़ी ने ये झण्डा दिया। इस पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि इस झण्डे को कायम रखना है हमारी जिम्मेदारी है और ये लड़ाई जहां पर हमारी सेनाएं, हमारे पुलिस बहादुरी के साथ मुकाबला कर रहे हैं, लेकिन केवल उनकी ही काम नहीं है। देश के मरना केवल सेना का ही कर्त्तव्य नहीं, हर नागरिक का है और देश वही बचा है जिसमें नागरिक उठ के खड़े हो गए हों। चाहे वियतनाम रहा हो चाहे लेनिनग्राद को देखिए जब जनता जाके खड़ी हुई है तो देश बचा है और आज उसकी आवश्यकता है और अस्सी करोड़ जनता के लोग और नौजवान इस देश का खड़ा हो जाए। तब हम अपनी सरहद पर मानों दीवार खड़ी कर सकते हैं किसी कि हिम्मत कौन जुर्रत है के हमारी सीमा को पार कर जाए। ठीक है हमारे पास साधन नहीं हैं। कि तनख्वाह दे करके कि सेनाएं हमेशा बढ़ाती चली जाएं, सेनाओं की बड़ा कुर्बानियां हैं हमको गर्व है, लेकिन आज सोचना है स्वतन्त्रता दिवस पर क्या गांधी जी ने स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों को तनख्वाह देकर

करके खड़ा किया था? इस देश के लिए उन्होंने कुर्बानी मांगी थी तो पूरा देश खड़ा हो गया। हम मुट्ठी भर चना भी ले करके हम जवानों को चाहते हैं आज कि वो आवें और देश की रक्षा करने के लिए सामने आएं और कोष की बात कहते हैं तो कभी भी देश तिजोरी ने नहीं बचा है अगर देश बचा है तो लहू और कुर्बानी से बचा है। और आज हम लोग सब चाहे हम नीचे बैठे हों, चाहे इस मंच पर बैठे हों, उस लोक शक्ति के साथ अपनी सीमा पर जो खतरे आ रहे हैं तो हमारी सीमा का रोज उल्लंघन होता है आना-जाना बना रहता है हथियारों को ले करके उसमें एक साथ जुट करके जाना होगा। इसकी तैयारी मन में रखनी होगी हमको तो आज स्वतन्त्रता के दिन पर, स्वतन्त्रता के प्रहरी चाहिए, लोग प्रहरी चाहिए जो आवें और सामने आवें। हम लोग सब, मैं स्वयं उनके साथ चलने को तैयार हूं। सीमा पर मरना अच्छा है, बजाए दिल्ली में बैठ करके इस सीमा के उल्लंघन को देखना है। आज वो देश कुर्बानी मांग रहा है हमको फिर से उस कुर्बानी के लिए तैयारी होगी अपने शहीदों को याद करने के लिए। और ये लड़ाई केवल सचिवालय से नहीं होगी, नार्थ ब्लाक और साउथ ब्लाक से नहीं होगी इस लड़ाई को खेत और खलिहानों तक ले जाना होगा, गलियों से जनता उठेगी। अस्सी करोड़ जनता के एक सौ साठ करोड़ हाथ उठेंगे और ये देश बचेगा इस पर खतरा कोई नहीं ले आ सकता, लेकिन इसी के साथ 80 करोड़ की धड़कनें, पंजाब की जनता के साथ, कश्मीर की जनता के साथ लगी हुई हैं वे हम से अलग नहीं हैं। उनकी रक्षा के लिए उन पर कोई भी अन्याय न हो किसी प्रकार का। हम वही कुर्बानी देने के लिए तैयार हैं एक न्याय और एक शांति का वातावरण वहां पर बने। जहां पर ये समस्याएं हैं। एक समस्या और बड़ी समस्या है जिसका जिक्र मैंने पहले ही दिन किया था। राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद का है वो। हम लोगों का पूरा प्रयास है कि इस का कोई रास्ता, कोई हल आपसदारी और समझदारी और प्रेम से निकले। क्योंकि वही इस देश का रास्ता रहा है अपनी समस्याओं को हल करने का। अभी तक इसमें विशेष कामयाबी नहीं मिली, लेकिन मैं उम्मीद नहीं छोड़ूंगा, लेकिन एक चीज जरूर कहूंगा कि भगवान का सबसे बड़ा मंदिर इंसान का दिल होता है और इंसान का दिल अगर टूटा तो कहां रहेंगे मंदिर, कहां रहेंगे मस्जिद? क्योंकि भगवान का जो है सबसे पवित्र निवास, इंसान का अंतर है इंसान का हृदय। जहां हमारी कोशिश हर तरह से समस्या समझा बुझा करके हल करने की है लेकिन उसी के साथ न्यायालय की मर्यादा को रखनी होगी अगर कोई समस्या इस देश में सुलझती नहीं। विभिन्न धर्म, विभिन्न विश्वास, विभिन्न भाषा, विभिन्न क्षेत्र के लोग अपना-अपना उनका विश्वास हो सकता है किसी के विश्वास पर मैं ठेस नहीं लगाना चाहता हूं, क्योंकि सबके विश्वासों का आदर करना पड़ता है, लेकिन अगर उनमें कहीं मतभेद आ जाए तो उस स्तर जो न्यायालय का है उसको हमको मान्य करना होगा, क्योंकि वो सरकार के से ऊपर हमारा न्यायालय होता है, लेकिन हम फिर भी हिम्मत रखे हैं कि कोई न कोई रास्ता निकलेगा। मंहगाई आज जनता को ग्रसित है हम चिन्तित हैं और मंहगाई की चोट सबसे ज्यादा गरीब पर पड़ती है, मजदूर पर

पड़ती है, रिक्शे वाले पर पड़ती है, ठेलेवाले पर पड़ती है सर पर जो बोझा ढो करके ले जाते हैं उन मजदूरों को पड़ती है। कुछ आर्थिक परिस्थितियां रही हैं, मुद्रास्फीति रही है कुछ समय से बजट के घाटे भी रहे हैं उससे हम लोग जूझ रहे हैं। उन पर भी काबू करने में कुछ समय लगेगा, लेकिन इसी के साथ हम यह भी कह देना चाहते हैं कि जनता के इस तकलीफ से जो मुनाफाखोरी करना चाहेंगे उनके साथ मजबूती से निपटा जाएगा उसमें कोई कमजोरी नहीं होगी ये बात जरूर है कुछ चीजों की मूल्य वृद्धि किसानों को हमने अच्छे दाम दिए हैं, गन्ने का अच्छा दाम दिया है, गेहूं का दिया है, चावल का दिया है उसका कुछ प्रभाव तो पड़ता है, लेकिन एक ओर मेहनतकशों को पूरे समृद्धि में हिस्सेदारी मिली। सबसे मुश्किल इस समय खाद्य तेल की है इसका मुख्य कारण रहा है कि पैदावार दस लाख टन कम हुई और दिक्कत इस साल है कि वर्षा हर जगह हुई बहुत अच्छी वर्षा हुई और इस वर्षा से मूल्यों पर भी प्रभाव पड़ेगा ये ऊपर की देन है, लेकिन सौराष्ट्र में जहां पर मूंगफली का उत्पादन होता है वहां पर इस साल भी वर्षा ठीक से नहीं हुई। मैं तो आज प्रार्थना करूंगा कि बादल सौराष्ट्र जाएं वहां वर्षा दे दें। हमारी तकलीफों को दूर करें और दूसरी ओर जो स्थिति ये मीडल ईस्ट में आई है वो हमारे पैट्रोल और डीजल का तेल है। पैट्रोलियम आयल प्रोडेक्ट जिसे कहते हैं तुरंत भाव बढ़े हैं। एक डालर अगर भाव बढ़ जाता है क्रूड आयल का तो चार सौ करोड़ भारत का बिल बढ़ जाता है चार सौ करोड़ विदेशी मुद्रा हमको अधिक लगानी पड़ती है। देखते-देखते करीब 1600 करोड़ से 2000 करोड़ का बोझा इन्हीं चंद हफ्तों पे हम पर पड़ गया विदेशी मुद्रा का। मैं आज देशवासियों से पूछना चाहता हूं कि एक आसान रास्ता ये आसान रास्ता है के कर्जा ले करके बारह तेल मंगा लिया जाए कुछ तो मंगाना ही पड़ेगा लेकिन पूरा विदेशी मुद्रा का कर्जा ले करके, तेल मंगा करके इन दामों को कम जरूर किया जा सकता है आप भी खुश होंगे, सरकार भी लोकप्रिय होगी और इसमें शायद मेरी भी कुर्सी मजबूत हो, लेकिन क्या कुर्सी को मजबूत करने के लिए देश के दूरगामी हितों की कुर्बानी हो सकती है इसमें जनरंजन जरूर होगा, लेकिन जनहित नहीं होगा और यह इसी तरह की तबाही होगी कि डाक्टर यह जानता रहे कि मरीज को डायबटीज हुई है, लेकिन इस डर से कि कहीं वो निकाल न दिया जाए इस डर से कहीं के उसकी फीस न बंद हो जाए वो मरीज को मिठाई खिलाता रहे और डाक्टर जरूर उस मरीज को खुश कर लेगा, लेकिन उस मरीज को मौत के घाट भी पहुंचा देगा। हर राजनैतिक नेतृत्व में वह हिम्मत होनी चाहिए और कुर्बानी करने की भी मरदा होनी चाहिए कि जहां लोगों को पूरा चित्र न मालूम हो, लेकिन जनहित का जो रास्ता हो उसके लिए उस रास्ते पे जनता को ले जाने के लिए हिम्मत होनी चाहिए और मुझे विश्वास है जो जनता इन कठिनाइयों को जानेगी, वो कुर्बानियों के लिए भी तैयार होगी और मैं तो कहता हूं किसानों को दो साल, एक साल अच्छे दाम मिल जाएं वो तो तिलहन उपजा करके खाली, यहां के आवश्यकताओं के लिए ही नहीं पाट लेंगे बल्कि विदेश के लिए भी इतना उत्पादन करेंगे कि हम भेज सकेंगे। इसमें हम धीरज का हम आपसे अनुरोध करेंगे, लेकिन

अन्य चीजों पर जरूर अगर कोई इस समय जनता के से जो फायदा उठाने की कोशिश करेगा तो उनका डटकर मुकाबला किया उसमें कोई कमजोरी नहीं रहेगी। इसी के साथ हम वो वाक्य को आज फिर इस मंच से दोहराना चाहते हैं जो मैंने पहली बार राष्ट्र को ये संदेश दिया था उसमें कहा था कि हम लोग गांवों और गलियों के धूल ले करके आए हैं उस धूल की मर्यादा की हम रक्षा करेंगे। और इन चंद महीनों में हमने कोशिश भी की है हमने कहा था पचास फीसदी साधन देश के गांवों में लगेंगे और आठवीं पंचवर्षीय योजना उसी आधार पर बन रही है कि गांवों को पचास फीसदी जो हैं साधन लगें। इस साल के बजट में भी प्रावधान किया गया। हमारे किसानों पर, मजदूरों पर, बुनकरों पर और दस्तकारों पर जो कर्जा का बोझा था उसका दो-तिहाई हिस्सा बोझा केन्द्र सरकार ने लिया ये भी फैसला हुआ। किसानों को जो मूल्य मिलते हैं जैसे ही ये सरकार आई मैंने अपने कलम से ये आदेश किया था कि वे आधार सिद्धांत रखे जाएं किसानों के अनाज के मूल्य के लिए जिसमें उनके साथ इंसाफ हो सके। नतीजा हुआ कि गेहूं का, चावल का अच्छे दाम मिले किसानों को। आज बजट से कितने भी पहुंचाने की कोशिश करते किसानों को पैसे को। वो पहुंचना नहीं वो बीच जो है जैसे नहर में काट करके पानी निकाल ले जाते हैं बीच में गरीब के पास आखिर तक नहीं पहुंच पाता है लेकिन इन मूल्यों के आज माध्यम से हजारों करोड़ का जो है साधन किसानों के पास हम लोग बड़े खूबी से पहुंचा सके हैं आज के कृषि में हमारी पांच कमियां हैं जिसको हम दूर करना चाहते हैं एक तो जो राष्ट्रीय उत्पादन प्रति व्यक्ति अगर हिसाब लगाया जाए ग्रामीण क्षेत्र में तो वो घटा, उत्पादन तो बढ़ा है, लेकिन प्रति व्यक्ति उत्पादन इसलिए घटा है कि आबादी लगभग गांव की वही बनी रही और प्रतिशत जो है पूरे राष्ट्र के उत्पादन के प्रतिशत में इसकी घटोत्तरी हुई। जो गांव वाला पैदा करता है और जो बेचता है और जो उसको खरीदना पड़ता है उनके दामों में सन्तुलन नहीं रहा है वो जो सन्तुलन जो बना वो उसके विरुद्ध बना उसके साधन जो हैं गांवों से निकलते रहे जो हमारी हरित क्राति आई ये तीसरी कमी है वो कुछ ही अनाज के लिए रही मुख्यत: गेहूं के लिए नही है लेकिन दलहनों और तिलहनों के लिए वो क्रांति नहीं आई। इसको भी सुधारना है और वो पूरे क्षेत्रों में नहीं आई कुछ ही क्षेत्रों में आ करके रह गई और सबसे चिन्ता की बात रही कि कृषि में पूंजी का भी लगना वो ठहर सा गया और अगर मंहगाई का ले लें तो किसानों को ठीक भाव नहीं पाये अगर मंहगाई के लिए भी करें। इन सारी चीजों को दूर करने के लिए हम एक राष्ट्रीय कृषि नीति, एक राष्ट्रीय कृषि संकल्प ले आएंगे इसी वर्ष के अंदर जिसमें पूरी कृषि नीति की घोषणा होगी। 1956 में औद्योगिक नीति की घोषणा हुई, लेकिन इस कृषि प्रधान देश में आज तक कृषि नीति की घोषणा, एक कृषि संकल्प, राष्ट्रीय कृषि संकल्प नहीं लिया और इसलिए करना चाहते हैं इसको की इससे देश में आने वाली सरकारें बंधी रहें। हम लोग तो बंधे ही रहेंगे, लेकिन केवल हम न बंधे रहें, लेकिन आगे वाली सरकारें भी जो हैं उससे बंधी रहें और गांवों का जो है चेहरा सुर्ख बना रहे।

इस अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री का वो नारा याद आता है "जय जवान और जय किसान" और जय जवान और जय किसान को अपना मान्य लक्ष्य रख करके हम लोग इस ओर बढ़ेंगे और अगला दशक सन् 90 का दशक किसान दशक के रूप में मनाया जाएगा इस दशक के अंदर जब किसानों के पिछले दशकों के साथ जो अन्याय हुआ है उस अन्याय को हम लोग दूर करेंगे। ये सन् 90 का दशक किसानों का दशक रहेगा और कृषि हमारे राष्ट्र का प्रथम उद्योग है बहस होती है कि कृषि उद्योग है के नहीं, मेरा कहना है कि कृषि हमारे राष्ट्र का सर्वप्रथम उद्योग है अगर वो उद्योग न चले तो दूसरे उद्योग नहीं चल सकते हैं, लेकिन इसमें कई रोक-टोक हैं उन रोक-टोक को हम इस दशक में हम लोग दूर करवाना चाहते हैं एक दिन या एक रात में नहीं हो सकेगा, लेकिन उस ओर हम लोग सक्षम रूप से बढ़ेंगे। किसान के व्यापार में रोक-टोक उस रोक-टोक को दूर करेंगे। जहां भी चाहे देश में वो अपना बेच सकता है उस पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए। अपने उत्पादन को वो और प्रोसेस करना चाहता है उस पर रोक-टोक हो, वो रोक-टोक जानी चाहिए। बाहर निर्यात के संबंध में उस पर रोक-टोक है। एकदम तो दूर नहीं कर सकते हैं, लेकिन उस ओर चलना होगा कि ये रोक-टोक कम हो, कर्जे भी जो उसको मिलते हैं। एक बार तो हम लोगों ने तो माफी की, लेकिन हर बार माफी नहीं हो सकती है। उसको भी कैसे इस रूप से साधन उपलब्ध किए जाएं कि वो कर्जे में न पड़े और उसके जो मुख्य चीजें हैं सिंचाई और बिजली इसमें से अधिक से अधिक साधन लगे ये हमारे किसान दशक के मुख्य लक्ष्य रहेंगे और इसी के साथ कृषि के साथ हम कृषि उद्योगों को भी जोड़ना चाहते हैं, क्योंकि कृषि उद्योग होंगे जब गांवों में रहेंगे तो शहरों की ओर आबादी दौड़ करके नहीं आएगी किसान इस हट करके गांवों में किसानी से अतिरिक्त रोजगार नौजवानों को मिले। ये हमारी आठवीं पंचवर्षीय योजना का इसमें रोजगार प्रमुख ध्येय है वो रखा गया है और हम जानते हैं अगर भारत को सबल करना है तो हमको उद्योग को भी सबल करना होगा। उद्योग की हम अवहेलना नहीं कर सकते हैं बिना एक सशक्त औद्योगिक आधार के भारत सबल नहीं होगा उसको हम मजबूती से करेंगे और इसमें विशेष रूप से निर्यात की ओर भी हमको ध्यान देना होगा और छोटे लघु उद्योगों की ओर भी हमको ध्यान देना होगा और जो लालफीतेशाही के अंदर हमारे उत्पादन की शक्तियां जो बंधी रही हैं उद्योग की दृष्टि से उस लालफीतेशाही को भी हमको काट करके उत्पादन की शक्तियों को अग्रसर करना होगा। हमको खुशी है कि गरीब को स्थान देने की आवाज उठाई जा रही है। राष्ट्र को अपने पहले संदेश में ही मैंने कहा था कि अगर सत्ता और सरकार तलवार है तो ये तलवार गरीबों की ओर से उठेगी। उनको न्याय दिलाने के लिए उठेगी और उसको आज इस पुण्य तिथि पर फिर से दोहराना चाहता हूं कि पूंजी और सत्ता के गठबंधन के व्यवस्था में जो मौजूदा व्यवस्था है उसमें गरीब का कहां स्थान है और ये आज की बात नहीं है ये लड़ाई हजारों-हजारों वर्ष की है। लालकिले में कौन से बादशाह और कौन से शंहशाह आए थे ये तो हम जानते हैं, लेकिन

लालकिले के किस कारीगर ने बनाया है इस आलीशान इमारत को उसको आज तक कोई नहीं जानता है। मंदिर की मूर्ति कारीगर गढ़ता है और वो मूर्ति मंदिर में जब लगाई जाती है तो ये तो मालूम होता है कि इस राजा के काल में ये मंदिर बना था, लेकिन वो कारीगर बेचारा नाम तो दूर रहा उस मंदिर में भी घुस नहीं पाता है कि जब वो मूर्ति स्थापित हो जाती है और उसी समाज और व्यवस्था की देन है कि भारत रत्न बाबा साहेब डा० भीमराव अम्बेडकर, जिन्होंने इस देश को संविधान दिया, संविधान तो उन्होंने दिया, लेकिन जिस जगह पर सैन्ट्रल हाल में संविधान रचा गया तो संविधान स्थापित हो गया तो वहां पर आज तक भारत रत्न बाबा साहेब डा० भीमराव अम्बेडकर का चित्र तक नहीं लग पाया। ये व्यवस्था की देन है इसमें हम ये पूछना चाहते हैं कि क्या इस व्यवस्था में हम गरीब को कोई स्थान दे सकते हैं। सत्ता के बनाने में गरीब का कोई जरूर हाथ दिखाई जरूर पड़ता है चुनावों में, लेकिन सत्ता के चलाने में गरीब का कोई हाथ नहीं है। क्या हममें वो हिम्मत है कि सत्ता के चलाने में भी हम गरीब को हाथ दे सकें। गरीबी का सवाल आर्थिक नहीं है मेरे दृष्टि से, गरीबी का सवाल राजनैतिक है। आज जो दलित कहलाते हैं। इतिहास में हजारों साल पहले लड़ाई में राजनैतिक हार हुई थी। उस राजनैतिक बदलाव से आज तक वे दलित हैं। तो सवाल तिजोरी का नहीं है सवाल तख्त का है तो तख्त पर बैठेगा वो तिजोरी को जो है वो अपने हाथ में रखेगा। अब वो दिन गए कि गरीब को हम तिजोरी से टुकड़े देते रहें वो टुकड़ों की लड़ाई नहीं लड़ रहा है हजारों वर्ष गरीबी में रहा है कुछ साल और रह लेगा वो अपनी आखिरी लड़ाई, अपनी इज्जत की लड़ाई लड़ रहा है। इंसान की तरह इंसान रहने की लड़ाई लड़ रहा है अब वो संबंध को तोड़ना होगा कि हम दाता बने रहें और गरीब ताता बना रहे। ये दाता और ताता का नाता तोड़ करके हमको भ्राता का नाता जोड़ना होगा ये नई व्यवस्था का परिवर्तन इसी को कहते हैं और हम लोगों ने देखा कि गरीबी के नाम पर गरीब लुटता रहा। गरीबी हटाने वाले, गरीबी हटाते रहे और गरीब बेचारा पीछे हटता चला गया अरे, गरीबी हटाने वालो अब तुम स्वयं हट जाओ अपना स्थान गरीब को दे दो, वो या तो अपनी गरीबी दूर कर लेगा या अपनी किस्मत पर तसल्ली कर लेगा और इसीलिए मैंने राज्य सभा में पेश किया कि रोज छोटे-छोटे कानून गरीबों को बनाने के लिए हम समय बर्बाद करते हैं। हिम्मत के साथ एक कानून बनाइये कि राज्य सभा और लोकसभा में और असेम्बलियों में जहां इस देश को चलाने के लिए फैसला होता है, जहां पर सत्ता है वहां पर हमारे अगर 40 फीसदी गरीब हैं तो 40 फीसदी हम गरीबों को स्थान राज्यसभा, लोकसभा और असेम्बलियों में देंगे। मुझे खुशी है कि हर दल के नेता चाहे वामपंथी दल हों, चाहे भारतीय जनता पार्टी हो, चाहे कांग्रेस रही हो सबने उसका स्वागत किया और समर्थन किया। राज्यसभा एक सदन के इस समर्थन से हिम्मत बंधी है और बहस को हम इस देश में उठाना चाहते हैं। और आज स्वतन्त्रता दिवस इस बहस को मैं देश के सामने रखना चाहता हूं इस पर बहस होनी चाहिए और बहस ही नहीं हम लोग फैसले करके इसको आगे भी बढ़ते हैं, क्योंकि एक नारा गरीब

को पूंजी नहीं, गरीब को सत्ता दो, वो परिवर्तन ले आएगा। हम लोगों का विश्वास है जिन सबको आगे ले आना है तिजोरी से आगे नहीं आएंगे उनको सत्ता में शिरकल और हिस्सेदारी से आएंगे और हम लोग वो शिरकत और हिस्सेदारी देने को तैयार हैं। डा० भीमराव अम्बेडकर के इस न्याय वर्ष में एक फैसला हाल में सरकार ने दिया कि पिछड़े वर्ग को हम सरकारी नौकरियों में और पब्लिक सैक्टर में स्थान दें। बहस होती है इससे आर्थिक लाभ कितना हो जाएगा, कितनों का हो जाएगा एक मायने में यह देखें तो सरकारी नौकरियां, हम देश की आबादी को लें तो केवल एक ही फीसदी होती हैं और एक फीसद में भी अगर चौथाई फीसद किसी को दिया जाए तो कितना उससे आर्थिक उत्थान का रास्ता नहीं है। (अस्पष्ट) लेकिन हम लोगों का नजरिया साफ है जो नौकरशाही है वो सत्ता के ढांचे का एक प्रमुख अंग है वो देश में फैसला जो करद होता है उसमें उसकी निर्णायक भूमिका है। दबे लोगों के कुचले लोगों को, पिछड़े लोगों को सत्ता के इस ढांचे में देश के चलाने में और संवारने में और उसके फैसला में हम हिस्सेदारी देना चाहते हैं और मजबूती से देना चाहता हैं और देखिए इस व्यवस्था क्या है जो हमारा पिछड़ा वर्ग 52 फीसद लेकिन सरकारी नौकरियों में उसकी हिस्सेदारी साढ़े चौदह फीसद और क्लास वन अफसरों में केवल साढ़े चार फीसदी। ये न्याय-अन्याय कब तक चलेगा, न्याय करना होगा और उस न्याय को जब हम लोग करने चलते हैं तो जरूर व्यवस्था को जब धक्का लगता है तो कुछ हलचल जरूर होती है, लेकिन नौजवान साथियों मैं कहना चाहता हूं हम दिल टटोल करके देखें इस देश से हमको लेना की बात सोच करके अभी देश को जो जिनके पास नहीं है उनको देने की बात अगर सोचें हमको जीवन को ढालना पड़ेगा केवल अपने जीवन के परिवर्तन के बाद या सत्ता के परिवर्तन के बाद नहीं सोचनी होगी। झोंपड़ियों में रहने वाले और कमेरे वर्ग के जीवन में आप क्या परिवर्तन ले आ सकते हैं वो ही सही परिवर्तन होता है। मंत्री बदल जाते हैं, मंत्रालय बदल जाते हैं, प्रधानमंत्री भी बदल जाते हैं, लेकिन सवाल है कि गरीबों की जिंदगी में झोंपड़ी में रहने वालों की जिंदगी कब बदलेगी और वही बदलाव सही होता है। इसलिए इस बदलाव के अन्दर वो सामाजिक क्षेत्रों को जागृत करना होगा। वो जागृति में मैं नौजवानों को आहवान करता हूं कि एक न्यायपूर्ण समाज के बनाने में वो अपना सहयोग दें, क्योंकि गरीब का आंसू कुछ समय तक तो आंसू रहता है, लेकिन वही आंसू फिर तेजाब बन जाता है जो इतिहास के पन्नों को चिर करके धरती पे अपना (अस्पष्ट) बनाता है ये समझ लीजिए कि गरीब के आंख में जब तक आंसू हैं, आंसू जब सूख जाते हैं तो उसकी आंखें अंगार हो जाती हैं और ये इतिहास ने बताया कि जब गरीबों की आंखें अंगार होती हैं तो सोने के भी महल पिघलकर के तनालों में बहते हैं। आज उसकी ओर चेतना है केवल अपनी-अपनी बात को नहीं सोचना है इस व्यवस्था को हमको बदलना है। इसीलिए जब हमारे दलित वर्ग का सवाल आया आते ही, उनके सीटों का जो आरक्षण का किया। अनुसूचित जात और जनजात कमीशन को संवैधानिक कानूनी मर्यादा दी गयी और अब मजदूरों की हिस्सेदारी के लिए इस देश के

चलाने में उनकी हिस्सेदारी हो उसके लिए कानून ले आ करके हम लोग उनके अधिकारों को सुरक्षित करेंगे कि मजदूरों को जो है अपना केवल मजदूरी ही न ले। लेकिन इस देश के चलाने में उनकी हिस्सेदारी हो इसी तरह अगर हम दिल्ली में देखें, गांव के गरीब आते हैं और इंसान जिसको एक साया नहीं है वो सीवर पाइप में रहता है यो जो इंसान की तरह से जो पड़े हुए हैं सड़क के किनारे जो वही इसका घर बनता है उनके लिए भी हम कानून ले आएंगे जो दिल्ली में इतने मजदूर गांव से आते है। और यहां पर महल तो बनाते हैं, लेकिन उनको झोंपड़ी भी नसीब नहीं होती और इस संदर्भ में हमको गुरूनानक के वे शब्द याद आते हैं जिसमें उन्होंने कहा "सबको ऊंचा आखिए, नीच दीसे न कोई" यही अगर भारत में हो जाए तो गुरूनानक की वाणी न्याय की वाणी बनकर हो जाए इसी के साथ हमको यह भी देखना होगा कि जो दौलत आज देश के उत्पादन में बढ़ोत्तरी नहीं दे रही है उस पर किस तरह से कदम उठाए जाएं कि उत्पादक क्षेत्रों में वो लगे। लोहे का हल हमारे देश के लिए हीरे के हार से ज्यादे उपयोगी है। हीरे का हार देश के उत्पादन में कोई योगदान नहीं देता है, लेकिन किसान के लोहे का हल हमको अन्न उत्पादन करके देना है, देता है। इस पर भी हमको विचार करना होगा और जहां पर शहरी सम्पत्ति का सवाल है जो कानून तो बना, लेकिन उसमें बहुत सी कमजोरियां रही हैं, शहरी सम्पत्ति के बारे में उन कमजोरियों को भी दूर करना है और इस पर भी विचार करना है कि एक व्यक्ति को रहने के लिए कितना बड़ा बंगला चाहिए। जहां जिस देश में झोंपड़ियां हासिल नहीं है।। एक ओर लम्बे मकानों को बनाने के क्या अधिकार होने चाहिए बहस होनी चाहिए इस पर हम लोग भी फैसला करेंगे। नौजवान हमारे राष्ट्र के आधार हैं। उनकी वाणी नए युग की वाणी है, लेकिन सबसे बड़ी समस्या रोजगार है आज के नौजवानों के सामने। आठवीं पंचवर्षीय योजना रोजगार को ही धूरी मान करके बनाई जा रही है। काम करने के अधिकार को संवैधानिक दर्जा देने के हमारा संकल्प जो है वो सभी दलों के सहयोग से पूरा करने का हमारा निश्चय है लेकिन देश के साथ जो साधन हैं और विकास के क्षेत्र में जो अन्य क्षेत्रों में जिम्मेदारियों हैं। उसके दायरे के अंदर एक शुरूआत हम लोग जरूर करेंगे हम बड़ी उम्मीद की सबको सरकारी नौकरियां मिलें। कोई सरकार नहीं कर सकती, लेकिन हां अगर कोई काम करने को तैयार हो तो काम करने का अवसर जरूर मिलना चाहिए, लेकिन सवाल यह है कि काम कम करना चाहते हैं, इंतजाम ज्यादा करने चाहते हैं तो कामगर नहीं होना चाहते हैं इंतजामकार होना चाहते हैं और इंतजामकार में हम लोग भी हैं हम लोग कामगर में नहीं हैं। काम करने का अधिकार जब आता है तो हम को वो मर्यादा सामाजिक रखनी होगी कि काम करने वालों को इज्जत दिया जाए जब काम करने का अधिकार सही रूप में हो सकता है आपको जान करके की खुशी होगी कि सरकार ने फैसला किया है युवाओं के लिए इस वर्ष जहां देश में केवल 20 करोड़ का साधन किया गया था बजट में वहां अब 265 करोड़ रुपया खर्च करने का इसी वर्ष के अंदर हम लोगों ने फैसला किया है। इसमें नौजवानों को जो विभिन्न प्रोफेशन में पास होकर आते

हैं उनको रोजगार में लगाने के लिए बैंकों से 120 करोड़ की सहायता और लोन के रूप में देने का निर्णय किया गया है और शिक्षा के लिए बहुत से गरीब नौजवान हैं जो शिक्षा नहीं ले पाते हैं उनको भी बैंकों से 50 करोड़ कर्ज का प्रावधान किया गया और इस तरह से और रूरल अपने ग्रामीण क्षेत्र में जो नौजवान हैं उनके रोजगार की योजनाओं को 70 करोड़ तक के ऋण के साधनों को किया गया है, लेकिन ये साधन की बात है नौजवान जहां तक देश के साधन हैं वे आपके और आगे ही आपको ही इस विरासत में पूरे देश के साधन मिलते हैं लेकिन सबसे बड़ा साधन आप हैं आप स्वयं हैं, वो किसी भी देश के बजट से आप बड़े हैं, किसी भी सरकार से बड़े हैं और नौजवान साथी जब एक नई पीढ़ी का आहवान किया जाता है तो छोटे काम के नहीं आहवान किया जाता है, पूरे परिवर्तन के लिए किया जाता है। मैं आज आहवान करता हूं नौजवानों को कि इस देश में निरक्षरता जो शाप के रूप में है, अगर एक नौजवान जो साक्षर है अपने ज्ञान के दीप से पांच और दीप जलादे तो एक वर्ष में पूरे देश में दिपावली आ सकती है अज्ञान का, निरक्षरता का अंधकार जो है वो दूर हो सकता है उनके प्रकाश से आज हम संकल्प लें। हर नौजवान अगर ये संकल्प ले ले देश की बड़ी भारी सेवा होगी। इसी तरह जो आबादी का प्रश्न है उस पर भी हमको ध्यान देना होगा अगर उसको शिक्षित करने में लोगों को समझाने-बुझाने में। परिवार को सीमित रखने में नौजवानों को एक कार्यक्रम के रूप में आए। सरकार भी कंधे से कंधा लगा करके उनको कुछ काम करने भर की सुविधाएं जरूर प्राप्त कराकर देगी। एक बड़े भारी समस्या का हम निदान कर सकेंगे।

महिलाएं भारत में हमेशा गरिमा का स्थान पाई हैं, लेकिन वर्तमान जो सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था है उसमें वो सबसे पिछड़े वर्ग में हो गयी ये नहीं कि उनकी योग्यता में कोई कमी है, ये नहीं कि उनकी क्षमता में कोई कमी है, ये नहीं के उनके साहस में कोई है कमी है, लेकिन हमने उन्हें चूल्हे और चक्की में बांध रखा है। महिलाओं के गोद में एक राष्ट्र पलता है वो अपने गोद में एक राष्ट्र को पाल करके देती हैं हमारी परम्पराओं को पाल करके देती हैं, हमारी संस्कृति को वो संजोकर के रखती हैं, लेकिन इतना बड़ा जो योगदान दे। उसको देश के चलाने में कोई हिस्सेदारी नहीं है। जननी को ही अगर हम जंजीरों में बांधे रहें तो देश में जान कैसे आएगी? जो जीवन की सोच है वहीं घुटती रहे तो राष्ट्र में प्राण कैसे आएगा। इसलिए हम लोगों ने निश्चय किया है कि सत्ता में उनको शुरूआत दी जाए अधिकार देने की। पंचायत राज के अंदर तीस फीसदी स्थान महिलाओं को मिले। इसी सत्र के अन्दर वो कानून सदन के अंदर पेश किया जा रहा है। इसी के साथ महिलाओं के लिए का कानूनी दर्जे का भी कमीशन बनाएगा। मुझे उम्मीद है उनके समस्याओं से जो बहुतेरी हैं उनके निदाने करने में हमको सहायता मिलेगी। आज के दिन हम अपनी वीर सेना को, अपनी थल सेना को, अपनी नौसेना को, अपनी वायुसेना को हम भूल नहीं सकते हैं। जब हम उसको याद करते हैं तो हमारा सर ऊंचा होता है उन्होंने देश की शान को हमेशा रखा है अपनी कुर्बानियों से। और साइचिन

के जवानों के साहस आज दिल जाता है मेरा और जब मैं हिमालय को देखता हूं और उनको देखता हूं तो साइचिन के जवानों की हिम्मत हमको हिमालय से भी ऊंची दिखाई पड़ती है और मैं आज इस पर्व पर पूरे देश का आभार उनके प्रति प्रकट करना चाहता हूं आपको जान करके खुशी होगी कि "आकाश" मिसाइल का जो हम प्रयोग कर रहे थे उसका कल सफलता से हमने उसका प्रयोग किया है ये हमारे लिए हमारे वैज्ञानिकों के लिए एक गर्व की बात है उनके प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं इस अवसर पर हम भूतपूर्व सैनिकों को भी भूल नहीं सकते हैं और उनके लिए जो पेंशन के बारे में सुधार करने की बात थी उसके बारे में महत्वपूर्ण फैसले सरकार ले चुकी है और उसे शीघ्र सदन के सामने ले आएगी, लेकिन मैं भूतपूर्व सैनिकों को केवल पेंशनर नहीं मानता वो हमारे एकता के प्रतीक हैं। जब वर्दी पहनते थे तो नेतृत्व करते थे जब वर्दी पहनते थे तो चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे सिख हो, चाहे ईसाई हो, चाहे तमिल बोलने वाला हो , चाहे पंजाबी बोलने वाला हो, चाहे राजस्थानी बोलने वाला हो, चाहे बंगाली बोलने वाला हो सबने एक साथ कुर्बानी का संकल्प लिया भूतपूर्व सैनिकों आप केवल पेंशनर नहीं हैं। आपने नेतृत्व किया है जब आप वर्दी पहने थे आज भी समाज में नेतृत्व करें, उस एकता का नेतृत्व करें जब आप वर्दी पहने हुए थे जहां हिन्दू-मुसलमान, सिख और ईसाई चाहे जो भाषा बोलने वाले सब एक थे। उस भावना को जहां भी आप गांव में हों, मोहल्ले में हों, उसको प्रसारित करें और वहीं आप नेतृत्व जो है समाज का भी दें, क्योंकि हमारी भावनात्मक एकता, हमारी सबसे बड़ी ताकत है और ये भावनात्मक एकता एक दिन में नहीं आई, सदियों लगा विभिन्न धर्मों, विभिन्न विश्वासों को एकदम गंगा-जमुना की संस्कृति में संजोने में और ये थाती को हमको खोना नहीं है अगर इस पर जरब पड़ा तो देश पर जरब पड़ेगा। देश कोई कागज का नक्शा नहीं है। देश का नक्शा वहां के लोगों के रहने और रहने वालों के दिलों में बना करता है अगर दिलों में लकीरें पड़ी तो धरती पर भी लकीरें पड़ेंगी। इन लकीरों को हम पड़ने नहीं देंगे और इस तरह इस संस्कृति का अंदाज जानिसार अख्तर के शब्दों में मैं पेश करना चाहता हूं "ये देश के हिन्दू और मुस्लिम तहजिबों का शोहराजा है, सदियों की पुरानी है ये बात ये, पर आज भी कितनी ताजा है, इसकी ताजगी को हमको बनाए रखना है" और ये चुनौती हमारे सामने आई है और सवाल गुरबत का नहीं है, सवाल गैरियत का है। इंसान को गुरबत बर्दाश्त होती है, लेकिन गैरियत नहीं बर्दाश्त होती है, सवाल सहूलियत का नहीं है, सवाल शिरकत का है और शिरकत हम देना चाहते हैं अपने अल्पसंख्यकों को हमारे देश के विकास में, शिक्षा में हमारे एग्रीकल्चर बैंकों का हो और इंसाफ उनको होना चाहिए नौकरियों में, उनका इंसाफ होना चाहिए। इस इंसाफ की ओर हम बढ़ना चाहते हैं, एक चीज और वे कहते आए हैं जहां पर हम मजहबों के जो प्रर्वतक रहे हैं उनके जन्मदिवस पर छुट्टियां हैं इस देश में लेकिन प्रोफिट मौहम्मद के जन्मदिवस पर अभी कोई छुट्टी नहीं। मैं आज घोषित करना चाहता हूं कि सरकार ने निर्णय किया है कि प्रोफेट मौहम्मद के जन्मदिवस पर छुट्टी

मनाई जाएगी। आज जो एक इतने बड़े अल्पसंख्यक को नहीं मिला, प्राप्त हुआ था उनके दिल में एक कसक रहती थी जो हर एक मजहब के लोगों को मिला था वो उनको प्राप्त किया जाएगा। आज इराक और कुवैत की स्थिति जो है वो हमारे लिए चिन्ताजनक है हिंसा का हम समर्थन दुनिया में कहीं भी हो नहीं करते हैं। न ही हम सेना का उपयोग का हम समर्थन कर सकते हैं। इसी के साथ एक तरफा भी कार्रवाई नहीं होनी चाहिए। वहां जो हमारे भारतवासी हैं उनके जान और माल की हमको चिन्ता है इसीलिए अपने एक साथी, कैबिनेट के साथी मंत्री श्री आरिफ मौहम्मद खां को भेजा गया है वहां कि वो जा करके स्वयं देखें और वहां की मुश्किलात हैं; तकलीफ है या जो आना चाहते हैं उनके लिए प्रबंध करें। इस लिहाज से हम विभिन्न देशों से सम्पर्क में हैं कि एक ऐसा हल निकले जिसमें बल का प्रयोग न हो और सेनाओं का जो है उपयोग वो न हो। हमारे जो विदेशों से संबंध रहे हैं वो आम तौर से सुधरे हैं। रूस में मैं गया था प्रेजिडेंट गार्बाचोव जो वहां पर क्रांतिकारी परिवर्तन ले आ रहे हैं जो उन्होंने पूरी दुनिया में एक पहल की और अपने देश में की। उसको देखने का मौका मिला और बात भी करने का मौका मिला। भारत और रूस की जो एक परम्परागत मैत्री है केवल उसमें सुदृढ़ता नहीं आई बल्कि वहां गार्बाचोफ से बात करके भविष्य में भी हमको क्या करना है उसको भी हम लोगों ने एक रास्ता निकाला है रास्ता ढूंढा है। विश्व की समस्याओं के प्रति भारत का जो रोल होना चाहिए जो पहल होनी चाहिए उसमें भी उनको जो है समर्थन रहा है। अमरीका से भी हमारे संबंध सुधरे हैं उन्होंने जम्मू काश्मीर की समस्या पर जहां का सवाल हो और शिमला एग्रीमेंट का सवाल हो उनका नजरिया भारत के नजरिया के नजदीक आया है हम उसका भी स्वागत करते हैं। चीन से हमारी बातें एक सकारात्मक ढंग से चल रही हैं। नेपाल की समस्याओं को हमने हल किया। भूटान, मालद्वीप और मारीशस से हमारे संबंध हमेशा अच्छे रहे हैं वे बने हुए हैं, बंगला देश से भी हमारा सुधार हुआ है। तीन बीघा की एक समस्या थी जो एक कांटे की तरह चुभती थी वो बांटा निकाल दिया गया और अब पानी के वितरण के बारे में ज्यादे समझदारी, ज्यादे समझ के एक-दूसरे से बात हो रही है। श्रीलंका में हमारे जो भारत उत्पत्ति के तमिलवासी हैं उनके जीवन के बारे में जो नागरिक हैं जो सिविलियन्स हैं उनके जीवन के बारे में हमारी चिन्ता है और उनके बारे में हम लोगों ने पहल किया कि कोई श्रीलंका के अंदर कोई कैम्प बनाया जाए जहां उनके सुरक्षा हो सके, हम मदद कर सकें। ये बात चल रही है और मेरा विश्वास है कि अन्य देश भी इसमें जरूर कुछ मददगार होंगे। लेकिन उग्रवादियों को मिलिटेंटस को हम अपने धरती के अंदर भारत को एक केन्द्र बनाने नहीं देंगे। हम शांति चाहते हैं शांति श्रीलंका में चाहते हैं, शांति हम भारत में चाहते हैं इस नीति पर हम चलेंगे। जहां जब संबंध हमारे सुधरे। दुर्भाग्य है कि हम दोस्ताना नीयत रखते हुए भी पाकिस्तान से हमारे संबंध नहीं सुधरे। वो सारी घटनाएं आपके सामने हैं, उनको कहा जा चुका है। इस अवसर पर मैं पुनः उनको नहीं दोहराना चाहता हूं लेकिन दो बाद कहना चाहता हूं। हम दोस्ती चाहते हैं और एक कदम

बढ़ेंगे तो हम दो कदम बढ़ेंगे। साथ ही देश की एकता और अखण्डता के साथ कोई समझौता नहीं होगा। अगर कहीं नीयत से खोट है तो पूरा देश उसका मुकाबला करेगा ये भी कह देना चाहते हैं। हम लोगों ने जनतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है। व्यक्तिगत राजनीति से मुद्दों की राजनीति पर चले हैं और आज अगर भारतीय जनता पार्टी और वामपंथी पार्टियों का समर्थन मिल रहा है कोई व्यक्ति के आधार पर नहीं मिल रहा है जो कार्यक्रम हैं उसके मुद्दों के आधार पर मिल रहा है। एक सैद्धांतिक प्रयोग है देश के अंदर इसमें आपकी धीरज, आपके समर्थन की आवश्यकता है। सत्ता का विकेन्द्रीकरण करके पंचायत राज को लागू करके लोकपाल के बिल को ले आ करके टीवी और रेडियो को स्वायत्ता देकर और इंटर स्टेट कोसिल को कायम करके हमने जनतंत्र की नीवों को और सुदृढ़ किया है, लेकिन इन ब्यौरों को छोड़ दीजिए ये तो तकदीर की बातें हैं आज के दिन भारत की महानता की ओर हमारी दृष्टि जाती है उसके अतीत की ओर जाती है और इस अवसर पर मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि इस झण्डे की शान को कभी झुकने नहीं दूंगा और मैं आपको आहवान करता हूं कि भारत के गौरव को कायम करने के लिए आज सामने आवें, मैं आहवान करता हूं किसानों को आहवान करता हूं, मजदूरों को आहवान करता हूं, नौजवानों को आहवान करता हूं, महिलाओं को आहवान करता हूं, आहवान करता हूं उद्योगपतियों को भी, आहवान करता हूं कलाकारों को और लेखकों को, आहवान करता हूं बच्चों का भी आहवान करता हूं कि सत्ता के परिवर्तन में भले ही वोट न दे सकें, लेकिन देश को बचाने के लिए एक बच्चा भी सामने आ सकता है आज मैं उसका भी आहवान करता हूं। ये रास्ता आसान नहीं है, कठिन रास्ता है, लेकिन हम एक बहादुर, भारत के बहादुर संतान हैं। हमारी धमनियों में जो है, वीरता की धारा बहती है, हम हिम्मत हारने वाले नहीं हैं और तूफान भी आएंगे इस झण्डे का एक रेशा भी अलग नहीं कर पाएंगे और रात के अंदर अगर बिजली भी चमकेगी तो हम दहशत नहीं खाएंगे जो बिजली जो है हमारे रास्ते की रोशनी बन करके रह जाएगी और हम रास्ता भी उसमें से निकाल लेंगे। इस अवसर पर सुभाष चन्द्र बोस ने जो नारा दिया था हम आपसे प्रार्थना करेंगे, बुलन्दगी से वो नारा लीजिए। हिमालय के पर्वत से लेकर, कन्याकुमारी की लहरों तक पहुंचे और सुभाष चन्द्र का नारा. . .

जय हिन्द. . . . . .जय हिन्द. . . . . .जय हिन्द